Airo International Research Journal

Volume XIII, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19

UGC Approval Number 63012

महिला सशक्तिकरण और राजनीतिक जागरूकताः की बाधाओं और चुनौतियां

Shadab Nawaz,
Research Scholar OPJS University Supervisor
Dr. Santosh
Assistant Professor

सारांश

भारत में महिलाओं की राजनीतिक संस्थाओं में अधिक प्रतिनिधित्व की मांग को भारत में महिलाओं ही स्थिति पर समिति (सीएसडब्ल्यूआई, ने 1976 में अपनी रिपोर्ट प्रकाशित की थी। सीएसडब्ल्यूआई की रिपोर्ट ने सुझाव दिया था कि राजनीतिक संस्थानों में विशेष रूप से घास पर महिला प्रतिनिधित्व महिलाओं के लिए सीटों के आरक्षण की नीति के माध्यम से जड़ों के स्तर को बढ़ाने की आवश्यकता है। भारत में महिलाओं की स्थिति पर समिति,1974 ने देखा कि संविधान दद्वारा प्रदत्त अधिकारों ने समानता और शक्ति का भ्रम पैदा करने में मदद की है। जिसका उपयोग अक्सर महिलाओं को समाज में अपनी न्यायसंगत और समान स्थिति को प्राप्त करने के लिए सुरक्षात्मक और त्वरक उपायों का विरोध करने के लिए एक तर्क के रूप में किया जाता है। भारतीय संविधानों द्वारा निर्धारित उपरोक्त प्राथमिकता में वर्णित अध्ययन महत्व । प्रस्तावित अध्ययन समाज में महिलाओं के सही स्थान का विश्लेषण करेगा और उन्हें सुरक्षित करेगा और उन्हें खुद की नियति तय करने में सक्षम बनाएगा और वास्तविक और स्थायी लोकतंत्र के विकास के लिए राजनीति में महिलाओं की भागीदारी आवश्यक है। इससे न केवल उनके व्यक्तित्व का उत्थान होगा बल्कि उनके सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण के रास्ते खुलेंगे। सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी से समाज की कई समस्याओं का समाधान होगा।

मुख्य शब्दः महिला सशक्तिकरण, राजनीतिक जागरूकता, बाधाये और चुनौतियां

प्रस्तावना

''जब तक महिलाओं को सभी प्रकार के उत्पीड़न से मुक्त नहीं किया जाता, तब तक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं की जा सकती। हम सभी इस बात पर विचार करते हैं कि पुनर्निर्माण बेहतर हुई है और उन्हें सभी में हस्तक्षेप करने का अधिकार दिया गया है समाज के किसी भी अन्य सदस्य के साथ जीवन के पहलू ष्नेल्सन मंडेला, महिलाएं कितने बच्चे हैं और कब होनी है, यह तय करके जनसंख्या के रुझान को निर्धारित करती है। वर्तमान में प्रजनन आयु (55%)री अधिकांश विवाहित महिलाएं आधुनिक गर्भनिरोधक का उपयोग करके अपनी गर्भधारण ही योजना बनाने की क्षमता रखती हैं। फिर भी अभी भी 210 मिलियन महिलाएं हैं जो अपनी अगती गर्भावस्था

को स्थगित करना चाहती हैं या पूरी तरह से प्रसव को रोकना चाहती हैं लेकिन आधुनिक गर्भनिरोधक का उपयोग नहीं कर रही हैं। इन महिलाओं में से ज्यादातर या तो निम्न देशों में रहती हैं या मध्यम वर्ग या उच्च आय वाले देशों के करीब तबके से ताल्लुक रखती हैं, और अक्सर उन ग्रामीण इलाकों में रहती हैं जहां उनकी सेवाओं की पहुंच खराब है। विशेष रूप से गरीब देशों में महिलाओं और बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए परिवार नियोजन प्रदान करना एक लागत प्रभावी साधन है। जन्म के हीच अंतराल को लंबा करने के लिए गर्भनिरोधक का उपयोग मातृ मृत्यु दर को कम करने और बाल अस्तित्व को बढ़ाने के लिए एक प्रभादी रणनीति है। जीवन में बहुत जल्दी बच्चे होना, विशेष रूप से 18 वर्ष की आयु से पहले, माता और बच्चे दोनों के लिए हानिकारक है न केवल किशोर गर्भधारण से जुड़े उच्च जोखिमों के कारण, बल्कि इसलिए भी कि प्रारंभिक

प्रसव आमतौर पर युवा महिलाओं को अन्य गतिविधियों को आगे बढ़ाने के अवसर से वंचित करते हैं, जैसे कि स्कूली शिक्षा या रोजगार, जो उनके सशक्तीकरण के प्रबल निर्धारक हैं। प्रारंभिक प्रसव विशेष रूप से उप– सहारा अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कॅरिबियन और एशिया के कुछ देशों में आम है, और अक्सर प्रारंभिक विवाह का परिणाम होता है। कुछ समाजों में, प्रारंभिक बाल विवाह शारी से पहले बड़े पैमाने पर होता है क्योंकि किशोर जो यौन रूप से सक्रिय हैं , गर्भनिरोध से संबंधित जानकारी, मार्गदर्शन और सेवाओं को प्राप्त करने में काफी बाधाओं का सामना करते हैं। किशोर प्रजनन क्षमता को कम करना सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों में एक लक्ष्य है जो 2015 तक कई क्षेत्रों में पूरा नहीं होगा।

आम तौर पर, लड़कियों में लड़कों की तुलना में बचपन बचने की संभावना अधिक होती है, फिर भी अतिरिक्त महिला बाल मृत्यु दर ऐतिहासिक रूप से उन समाजों में आम है जो लड़कियों की तुलना में लड़कों को अधिक महत्व देते हैं। ये असमानताएँ विकास के साथ अधिकांश देशों में गायब हो गई हैं, लेकिन वे अभी भी जनसंख्या दिग्गजों, चीन और भारत में मौजूद हैं। इसके अलावा, गर्भाशय में एक बच्चे के लिंग का पता लगाने के तरीकों की उपलब्धता ने उन देशों की आबारी के महत्वपूर्ण क्षेत्रों के लिए सेक्स चयन को संभव बना दिया है जहां बेटे की प्राथमिकता व्यापक है। नतीजतन, विशेष रूप से कम प्रजनन वाले देशों में जहां बेटे की प्राथमिकता मजबूत होती है, पुरुष से महिला जन्मों का अनुपात जैविक मानदंडों से परे बढ़ गया है और जनसंख्या में प्रमुख सेक्स असंतुलन के लिए अग्रणी है।

1960 के दशक में शुरू हुई आधुनिक गर्भनिरोधक के विकास और व्यापक उपयोग के साथ महिलाएं अपने प्रजनन जीवन पर नियंत्रण रखती हैं, महिलाओं की बढ़ती संख्या यह चुनने में सक्षम है कि बच्चे कब और

कितने होने चाहिए। नतीजतन, वे स्कूल में लंबे समय तक रहने, औपचारिक नौकरी पाने या करियर का पीछा करके अपनी क्षमताओं में सुधार करने में सक्षम रहे हैं। इसके अलावा जब महिलाओं को उनके प्रजनन विकल्पों का एहसास हो सकता है, तो उनके पास आमतौर पर कम बच्चे होते हैं, अन्यथा वे नहीं होते। नतीजतन, आधुनिक गर्भनिरोधक के बढ़ते उपयोग के समानांतर वैश्विक प्रजनन क्षमता में स्पष्ट रूप से गिरावट आई है। विकासशील देशों में प्रजनन क्षमता में कमी और भी अधिक कटोर है। आज 15–49 आयु वर्ग की 55: विवाहित महिलाएँ आधुनिक गर्भनिरोधक का उपयोग करती हैं और 15–49 आयु वर्ग की केवल 18: महिलाएँ उन देशों में रहती है जहाँ प्रजनन क्षमता अभी भी प्रति महिला तीन बच्चों से ऊपर है। बच्चों की संख्या में इतनी अभूतपूर्व कमी कि महिलाओं के भालू ने अपने स्वास्थ्य और अपने बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार में योगदान दिया है महिलाओं की

सामाजिक–आर्थिक स्थिति को बढ़ावा दिया है

उनके बच्चों के लिए बेहतर संभावनाएं पैदा की हैं और जनसंख्या वृद्धि को धीमा कर दिया है। यद्यपि प्रजनन क्षमता में कमी लगभग सार्वभौमिक है, देशों और क्षेत्रों में अभी भी उनके प्रजनन स्तर और गर्भनिरोधक उपयोग के स्तर के संबंध में काफी भिन्नता है। पूर्वी एशिया में प्रजनन क्षमता सबसे कम है (प्रति महिला 1.6 बच्चे), इसके बाद विकसित देशों में एक समूह (1.7 महिला प्रति महिला) है। पूर्वी एशिया में गर्भनिरोधक का प्रचलन भी सबसे अधिक है, जिसमें 84: विवाहित महिलाएँ 15– 49 वर्ष की आयु में गर्भनिरोधक विधि का उपयोग करती हैं। 73% गर्भनिरोधक के साथ विकसित देशों में दूसरा उच्चतम स्तर है। उप– सहारा अफ्रीका में अधिक महिलाओं को गर्भनिरोधक की आवश्यकता होती है जे गर्भनिरोधक के कुछ तरीकों का उपयोग करते हैं। इसके अलावा, उप–सहारा अफ्रीका में लगभग एक–तिहाई गर्भनिरोधक उपयोगकर्ता अभी भी गर्भनिरोधक के पारंपरिक तरीकों पर भरोसा करते हैं, जिनकी प्रभावशीलता खराब है। कुल मिलाकर, सब–सहारा अफ्रीका में 15–49 वर्ष वी आयु की 26: विवाहित महिलाओं को गर्भनिरोधक की सख्त आवश्यकता है। बिना किसी आवश्यकता के अनुमानित रुझानों से संकेत मिलता है कि दक्षिण अफ्रीका के अपवाद के साथ, उप–सहारन अफ्रीका में कोई अन्य क्षेत्र 1990 के बाद से अपरिवर्तित आवश्यकता को कम करने में कामयाब नहीं हुआ है।

महिलाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति

इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम महिलाओं के इतिहास में एक महान क्रांति के बीच हैं। सबूत हर जगह है संसद, कोर्ट और गलियों में महिलाओं की आवाज तेजी से सुनी जा रही है। जबकि पश्चिम में महिलाओं को अपने कुछ बुनियादी अधिकारों को पाने के लिए एक सदी से अधिक समय तक संघर्ष करना पड़ा, जैसे कि

Airo International Research Journal

Volume XIII, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19

UGC Approval Number 63012

मतदान का अधिकार, भारत के संविधान ने शुरुआत से ही पुरुषों के साथ महिलाओं को समान अधिकार दिए। दुर्भाग्य से इस देश में महिलाएं अशिक्षा और दमनकारी परंपरा के कारण अपने अधिकारों से अनभिज्ञ हैं। कल्पना चावला जैसे नामः भारत में जन्मीं, जिन्होंने नासा में अपनी लड़ाई लड़ी और वे अंतरिक्ष में जाने वाली पहली महिला थी, और इंदिरा गांधीः भारत की आयरन वुमन राष्ट्र की प्रधान मंत्री, ऐश्वर्या राय और सुष्मिता सेन जैसी ब्यूटी क्वीन्स। और मदर टेरेसा भारतीय महिलाओं की स्थिति की प्रतिनिधि नहीं हैं।

दुनिया की पचास प्रतिशत भारतीय आबादी में महिलाएं शामिल हैं। वे अपने समाज के जीवन के सभी पहलुओं में सक्रिय रूप से शामिल हैं। हालाँकि महिलाओं के श्रम विभाजन में देश से लेकर देश तक और संस्कृति से लेकर संस्कृति तक वी हिस्सेदारी है, लेकिन उनका औसत कार्य दिवस प्रतिदिन 13 से 17 घंटे के ही का माना जाता है।

उनकी स्थिति जीवन में अपनी पहचान बनाने के लिए संघर्षशील है क्योंकि वेः (क) आमतौर पर नौकरियों और वेतन के बगल में पुरुषों की तुलना में गरीब हैं (ख) अभी भी कम शिक्षित हैंय (ग) अपने आश्रितों का समर्थन करने के लिए न्यूनतम या अशक्त संसाधनों के साथ तेजी से घरों के प्रमुख बन रहे हैं (घ) विशेष रूप से कृषि में, उनके श्रम योगदान के लिए उचित पावती का आनंद नहीं लेते हैं, और (ड़) परिवार के साथ–साथ व्यक्तिगत जीवन में भी निर्णय लेने की शक्ति नहीं रखते हैं। भारतीय पारंपरिक और अभी भी आधुनिक समाज एक पितृसत्तात्मक समाज है जो धर्म और संस्कृति के बहाने महिलाओं को एक अधीनस्थ स्थिति में रखता है। इन बहानों में कई वर्षों से सामाजिक रीति–रिवाजों और मानव रहित कानूनों और कानूनों का समर्थन है जो पितृसत्ता और महिलाओं की अधीनता को बनाए रखते हैं। इसने पुरुषों और महिलाओं के बीच, श्रम के विभाजन, लाभ का हिस्सा, कानून और राज्य में, घरों में कैसे संगठित किया जाता है, और ये कैसे परस्पर संबंधित है, के दरीच असमानता को बनाए रखा है।

महिलाओं का सशक्तीकरण और राजनीतिक भागीदारी

सशक्तिकरण एक फैशनेबल और चर्चा शब्द बन गया है। यह अनिवार्य रूप से अधिकार और शक्ति के विकेंद्रीकरण का मतलब है। इसका उद्देश्य निर्णय लेने की प्रक्रिया में वंचित शब्दों में आवाज को आवाज दे रहे हैं।

कार्यकर्ता चाहते हैं कि सरकार विधायी उपार्यो और कल्याण कार्यक्रमों दद्वारा महिलाओं सहित गरीब लोगों को सशक्त बनाए। सशक्तीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निराश या शक्तिहीन लोग अपनी परिस्थितियों को

बदल सकते हैं और अपने जीवन पर नियंत्रण करना शुरू कर सकते हैं। यह सत्ता के संतुलन में जीवित स्थितियों में और रिश्तों में परिवर्तन का परिणाम है। जब तक वास्तव में इन वर्गों में क्षमता का निर्माण नहीं किया जाता है, तब तक शक्ति का उपयोग अन्य लोगों दवारा उस खंड के बजाय किया जाता है जिसके लिए वे अभिप्रेत हैं। 3 महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को समान दर्जा, अवसर और खुद को विकसित करने की स्वतंत्रता हो सकती है।

सशक्तिकरण का ध्यान महिलाओं को आर्थिक रूप से स्वतंत्र, आत्मनिर्भर होने के लिए प्रेरित कर रहा है, उन्हें किसी भी कठिन परिस्थिति का सामना करने में सक्षम बनाने के लिए एक सकारात्मक आत्म–सम्मान है और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में भाग लेने में सक्षम होना चाहिए।

राजनीतिक भागेदारी

राजनीतिक भागेदारी को विभिन्न तरीकों से परिभाषित किया गया है। राजनीतिक भागेदारी का मतलब न केवल वोट के अधिकार का प्रयोग करना है, बल्कि राज्य के सभी स्तरों पर सत्ता का बंटवारा सह–निर्णय लेना, नौति निर्धारण भी है। राजनीतिक भागेदारी को मोटे तौर पर एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने समाज के राजनीतिक जीवन में एक भूमिका निभाता है, उस समाज के सामान्य लक्ष्यों और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने का सबसे अच्छा तरीका क्या है, यह तय करने में भाग लेने का अवसर होता है। राजनीतिक भागीदारी इन स्वैच्छिक गतिविधियों में वास्तविक भागेदारी को संदर्भित करती है जिसके द्वारा समाज के सदस्य शासकों के चयन में हिस्सेदारी करते हैं और प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सार्वजनिक नीति के निर्माण में।

राजनीतिक भागेदारी एक गतिविधि को संदर्भित करती है जिसके दवारा नागरिकों को सरकार की निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए डिजाइन किया गया है।

नागरिक राजनीतिक इनपुट प्रक्रिया में सक्रिय उत्तरदाता हैं, वह प्रक्रिया जिसके दवारा राजनीतिक निर्णय किए जाते हैं। जैसा कि बादाम–पावेल ने भागेदारी को इंगित किया ष्राजनीतिक निर्णय लेने में निर्णय लेने के लिए समाज में समूहों से दबाव।

विधायी निकायों में महिलाओं के वोटिंग अधिकार प्रतिनिधित्व की कवायद नीति सूत्र या निर्णय निर्माताओं के रूप में बहुत कम है। महिलाएं विधायी निकायों में अधिक स्थान की मांग कर रही हैं। दुनिया के अधिकांश देश अपनी राजनीतिक व्यवस्था में महिलाओं को उचित स्थान और प्रतिनिधित्व देने में विफल रहे हैं, केवल

कुछ ही देशों में महिलाएं पुरुषों के साथ समान रूप से आगे बढ़ रही हैं, उदाहरण के लिए, जर्मनी, स्वीडन, नॉर्वे, डेनमार्क और फिनलैंड। इन देशों में महिलाएं निर्णय लेने की प्रक्रिया में पर्याप्त सुधार कर रही हैं। पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अमेरिका जैसे उन्नत देशों में, विधायिका में महिला उपस्थिति छोटी और अपेक्षाकृत महत्वहीन है जैसे कि एशिया के विकासरील देशों जैसे भारत पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान, चीन आदि में।

Airo International Research Journal

Volume XIII, ISSN: 2320-3714
February, 2018
Impact Factor 0.75 to 3.19

UGC Approval Number 63012

भारतीय महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी

भारत और दुनिया भर में महिलाओं के जीवन को पांच 'Ps' पितृसत्ता के रूप में कहा जा सकता है, उत्पादक संसाधन अपर्याप्तता, गरीबी, संवर्धन उन्नति अपर्याप्तता और शक्तिहीनता तक पहुँचते हैं। 14 प्रतिशत यह अनुमान लगाया जाता है कि महिलाएं दुनिया के काम की दो–दो बातें करती हैं। बदले में वे सभी आय का केवल 10 प्रतिशत प्राप्त करते हैं और पूरी दुनिया के उत्पादन के साधनों का केवल एक प्रतिशत है। यह एक सच्चाई है कि वास्तविक सामाजिक स्थिति और महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी के वास्तविक स्तर का अलगाव में विश्लेषण नहीं किया जा सकता है। इसके विपरीत, यह सामाजिक सामाजिक स्थितियों राजनीतिक जलवायु और पारंपरिक सामाजिक

संरचना, इसके मानदंडों और मूल्यों ति– रिवाजों में निहित असमानताओं के साथ जुड़ा हुआ है। ये सभी कारक मिलकर महिलाओं की वास्तविक सामाजिक स्थिति का निर्धारण करते हैं। इतना ही नहीं, महिलाओं की स्थिति क्षेत्र, जाति, वर्ग और धर्म के अनुसार और जनजातीय, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के विचारों के अनुसार अलग–अलग होती है। षकिसी व्यक्ति की स्थिति विकास प्रक्रिया में पूरे दिल से भाग लेने के लिए एक बड़ी ताकत है। परंपराओं और धार्मिक विश्वासों की कट्टरता के कारण महिलाओं को उननी हीन स्थिति ने उन्हें फिर से विकास की प्रक्रिया में सक्रिय भागेदारी से रोक दिया। ऐतिहासिक रूप से महिलाओं को परंपराओं, मानदंडों और समाज के मूल्यों को आगे बढ़ाने के लिए माना जाता है। समाजीकरण की प्रक्रिया उन्हें अंदर से गुजरती है। उनके परिवार उन्हें गैर–पारंपरिक भूमिकाओं के लिए तैयार नहीं करते हैं। इस स्थिति की बेहतर समझ के लिए भारत में महिलाओं की स्थिति के ऐतिहासिक विश्लेषण ही आवश्यकता है।

निष्कर्ष

इस शोध ने उन महिलाओं को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों की पहचान की है जो नेतृत्व की स्थिति के लिए चलती हैं, उन्हें जिन सहूलियतों की आवश्यकता होती है, वे बाधाओं का सामना करती हैं, और कुछ संभव समाधान भी। परिणाम भारतीय समुदाय की मौजूदा महिलाओं के प्रति रुकावट पैदा करते हैं ज नेतृत्व में महिलाओं का समर्थन करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं।

उत्तरदाताओं दद्वारा पेश किए गए समाधान भी अभियान को व्यवस्थित करने संसाधनों की एक सूची तैयार करने और नेतृत्व में महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने के लिए आवश्यक संभावित नीति परिवर्तनों की पहचान करने में सहायता करेंगे।

हमारे गुणात्मक साक्षात्कार और फोकस समूहों के डेटा नेतृत्व में आने वाली महिलाओं की बाधाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। प्रतिभागियों ने अपने स्वयं के व्यक्तिगत अनुभवों के साथ–साथ अन्य महिलाओं के अनुभवों पर चर्चा की, विशिष्ट बाधाओं की पहचान की। प्रतिभागियों ने राजनीति पर अपने विचारों पर श्री चर्चा की जो उन्हें विभिन्न पदों के लिए चलने के लिए प्रेरित करता है , और ऐसा करते समय महिलाओं को किस समर्थन की आवश्यकता होती है। प्रतिभागी अपने जीवित अनुभवों के बारे में बहुत मुखर थे, और आगे बढ़ने के लिए समाधान साझा करने के लिए उत्सुक थे। कुल मिलाकर, यह शोध समुदाय में महिला राजनेताओं के विस्तृत अनुभवों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। ये परिणाम समुदाय में समर्थन महिलाओं के लिए रुचि के क्षेत्रों को इंगित करते हैं।

नेतृत्व में महिलाओं का समर्थन करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं।

उत्तरदाताओं दद्वारा पेश किए गए समाधान भी अभियान को व्यवस्थित करने संसाधनों की एक सूची तैयार करने और नेतृत्व में महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने के लिए आवश्यक संभावित नीति परिवर्तनों की पहचान करने में सहायता करेंगे।

हमारे गुणात्मक साक्षात्कार और फोकस समूहों के डेटा नेतृत्व में आने वाली महिलाओं की बाधाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं। प्रतिभागियों ने अपने स्वयं के व्यक्तिगत अनुभवों के साथ–साथ अन्य महिलाओं के अनुभवों पर चर्चा की, विशिष्ट बाधाओं की पहचान की। प्रतिभागियों ने राजनीति पर अपने विचारों पर श्री चर्चा की जो उन्हें विभिन्न पदों के लिए चलने के लिए प्रेरित करता है , और ऐसा करते समय महिलाओं को किस समर्थन की आवश्यकता होती है। प्रतिभागी अपने जीवित अनुभवों के बारे में बहुत मुखर थे, और आगे बढ़ने के लिए समाधान साझा करने के लिए उत्सुक थे। कुल मिलाकर, यह शोध समुदाय में महिला

राजनेताओं के विस्तृत अनुभवों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। ये परिणाम समुदाय में समर्थन महिलाओं के लिए रुचि के क्षेत्रों को इंगित करते हैं।

ग्रन्थ – सूची

- अहेर, के। आर।, डिटमार, ए। के। द बोईस ऑफ द चेंजिंगः द इम्पैक्ट ऑन फर्म वैल्यूएशन ऑफ मॅडेटेड फीमेल बोर्ड रिप्रेजेंटेशन । वर्किंग पेपर, 2011।
- प्रोमिला कपूर भारतीय महिला सशक्तिकरण, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली, प्रस्तावना, 2001|

- संयुक्त राष्ट्र एजेंडा फॉर डेवलपमेंट (संयुक्त राष्ट्र, न्यूयॉर्क, 1997), टीटी 44–49।
- मोहिनी गिरि, वी। मुक्ति और महिलाओं का सशक्तिकरण। ज्ञान बुक्स, 1998
- राज बाला, भारत में महिलाओं की कानूनी और राजनीतिक स्थिति, मोहित प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999 p.31
- विदयाबेन शाह, प्राचीन भारत में महिलाओं की भूमिका सी.के. जैन, भारत में महिला सांसद, सुरजीत प्रकाशन, 1993, पृष्ठ 3071 7,. सिंह, जे.टी., इंडियन डेमोक्रेसी एंड एम्पावरमेंट ऑफ वीमेन, इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन अक्टूबर– दिसंबर, Vol. XLVI, No.41, 2000, p.619 |
- रश्मि श्रीवास्तव, मध्यप्रदेश में विशेष संदर्भ के साथ राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरणष नीरज सिन्हा भारतीय राजनीति में महिलाएं, अनमोल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000, पृष्ठ 2061
- हंटिंगटन, एस, पी, नेल्सन, जे. एम., नो ईजी चॉइसः पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन इन डिवेलपिंग कंट्रीज, कैम्ब्रिज, 1976, टी .41
- बादाम, डी.ए. वर्षा, एस।, सिविक कल्चर, प्रिंसटन, यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन, 1972, पृष्ठ.161 द्य
- बादाम, जी.ए., पॅवेल, जी.डी., वच.बपजस. पी। 33–361
- इमैनुअल, महिला और विकास, कर्णावती प्रकाशन, अहमदाबाद, 1998,
- च.221
- भारतीय समाजशास्त्र में आनंद कुमार श्रीडिंगः खंड आठवीरू भारत का राजनीतिक समाजशास्त्र ।ळम् प्रकाशन भारत, 31– दिसंबर 2013 सामाजिक विज्ञान 468 पृष्ठ
- क्रिस्पिन बेट्स, सुभो बसु रिथिंकिंग इंडियन पॉलिटिकल इंस्टीट्यूशंस एंथम प्रेस, 2005–राजनीति विज्ञान 262 पृष्ठ
- वी। मोहिनी गिरि मुक्ति और महिला ज्ञान सशक्तिकरण। हाउस, 01–जनवरी– 1998 – सामाजिक विज्ञान 354 पृष्ठ
- संदीप शास्त्री, के। सी। सूरी, योगेन्द्र यादव भारतीय राज्यों में चुनावी राजनीतिः 2004 में लोकसभा चुनाव और ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से परे, 2009 राजनीति विज्ञान – 453 पृष्ठ

- ईजीएम (2005) निर्णय लेने ही प्रक्रियाओं में महिलाओं और पुरुषों की समान भागीदारी, राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व पर विशेष रूप से जोर देने के साथ कुलदीप फादिया, भारत में राजनीतिक भागेदारी के माध्यम से महिला सशक्तिकरण, www.lipa.org.in
- एन बुकमैन वीमेन एंड द पॉलिटिक्स ऑफ एम्पावरमेंट टेम्पल यूनिवर्सिटी प्रेस 1987 कानून 324 पृष्ठ
- विश्व बैंक प्रकाशन, आर्थिक विकास में महिलाओं की भागेदारी बढ़ाना, पृष्ठ 25 01—जनवरी—1994 — महिला 76 पृष्ठ
- सुषमा सहाय महिला और सशक्तिकरणः दृष्टिकोण और रणनीतियाँ डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, 1998 महिला — 235 पृष्ठ
- Shvedova N (2002) संसद में महिलाओं की भागीदारी में बाधाएँ।
- ईरान में हमीद शाहिदियन महिलाएँः महिला आंदोलन बीनवुड पब्लिशिंग ग्रुप 2002 में उभरती आवाजे इतिहास 303 पृष्ठ
- महिला सशक्तीकरण सरूप एंड संस 2005 के माध्यम से लैंगिक समानता नी माया मजूमदार विश्वकोश महिला 573 पेज
- तोवर एम (2007) महिला और अभियान वित्तः राजनीति ही उच्च श्रीमत। महिला पर्यावरण और विकास
- वकार अहमद, अमिताभ कुंडू, रिचर्ड टीट इंडिया की नई आर्थिक नीतिः एक महत्वपूर्ण विश्लेषण रूटलेज, 04—अक्टूबर— 2010 — व्यापार और अर्थशास्त्र 322 पृष्ठ
- निरोजा सिंह ज्ञान प्रकाशन हो विमेन इन इंडियन पॉलिटिक्सः पॉलिटिकल पार्टिसिपेशन यूज के जरिए महिलाओं का सशक्तिकरण, 2000 राजनीतिक भागीदारी 302 पेज
- सिल्विया एच। जेंडर एंड पॉवर्टी की इंटरनेशनल हैंडबुकः कॉन्सेप्ट्स पॉलिसी रिसर्च,
- एडवर्ड एल्गर प्रकाशन 01—जनवरी— 2017 — सामाजिक विज्ञान 736 पृष्ठ
- विश्व बैंक विश्व विकास रिपोर्ट 2012: लिंग समानता और विकास विश्व बैंक प्रकाशन, 01—सितंबर 2017 सामाजिक विज्ञान — 456 पृष्ठ
- मैरी हॉलवर्ड—ड्रेमियर, तजीन हसन एम्पावेरिंग टीमेनः हीगल राइट्स एंड इकोनॉमिक अपॉच्युनिटीज इन अफ्रीका वर्ल्ड बैंक पब्लिकेशंस, 04—अक्टूबर— 2017— सामाजिक विज्ञान — 232 पृष्ठ